ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 13 अंकः 156 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका मई 2021

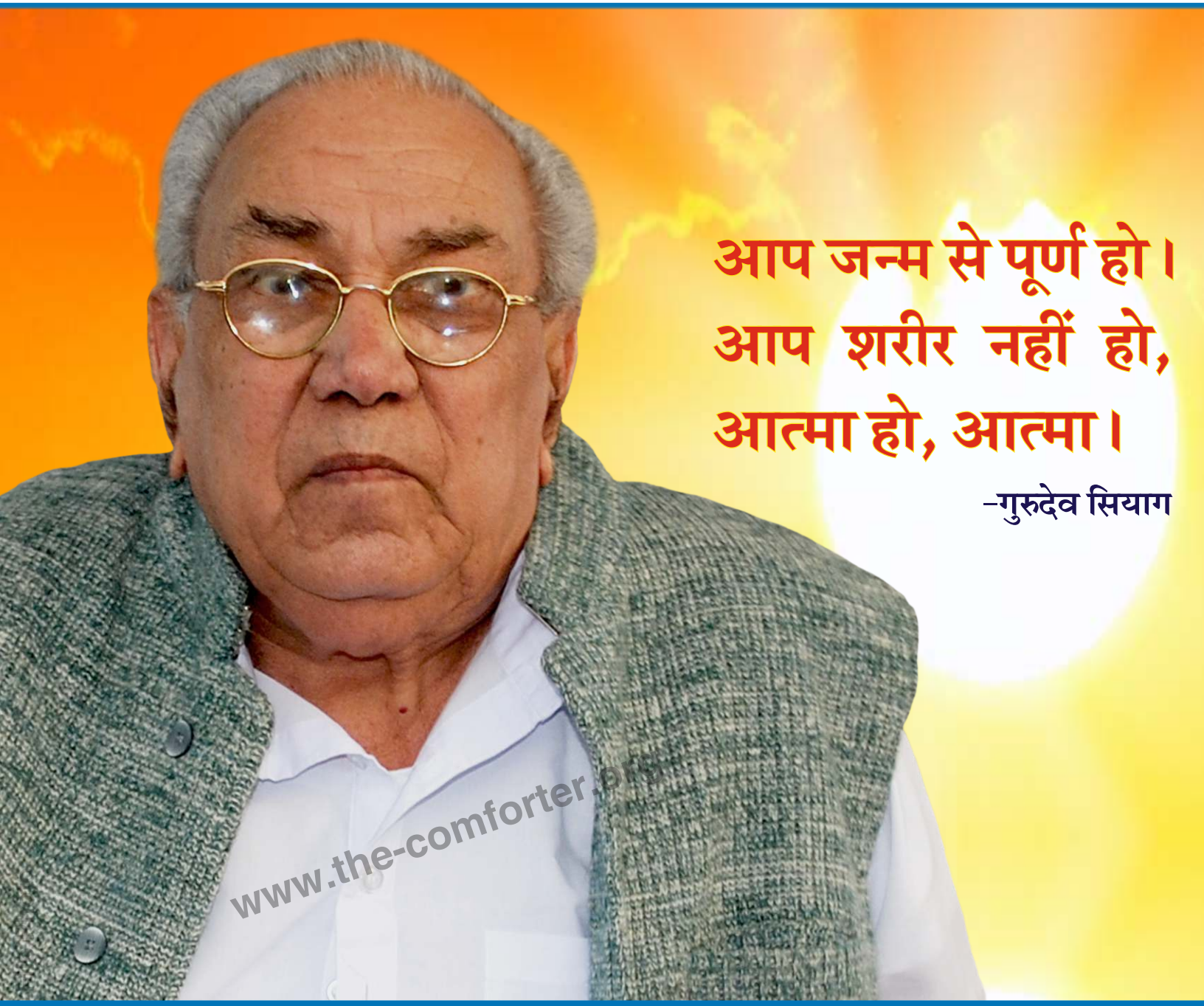

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

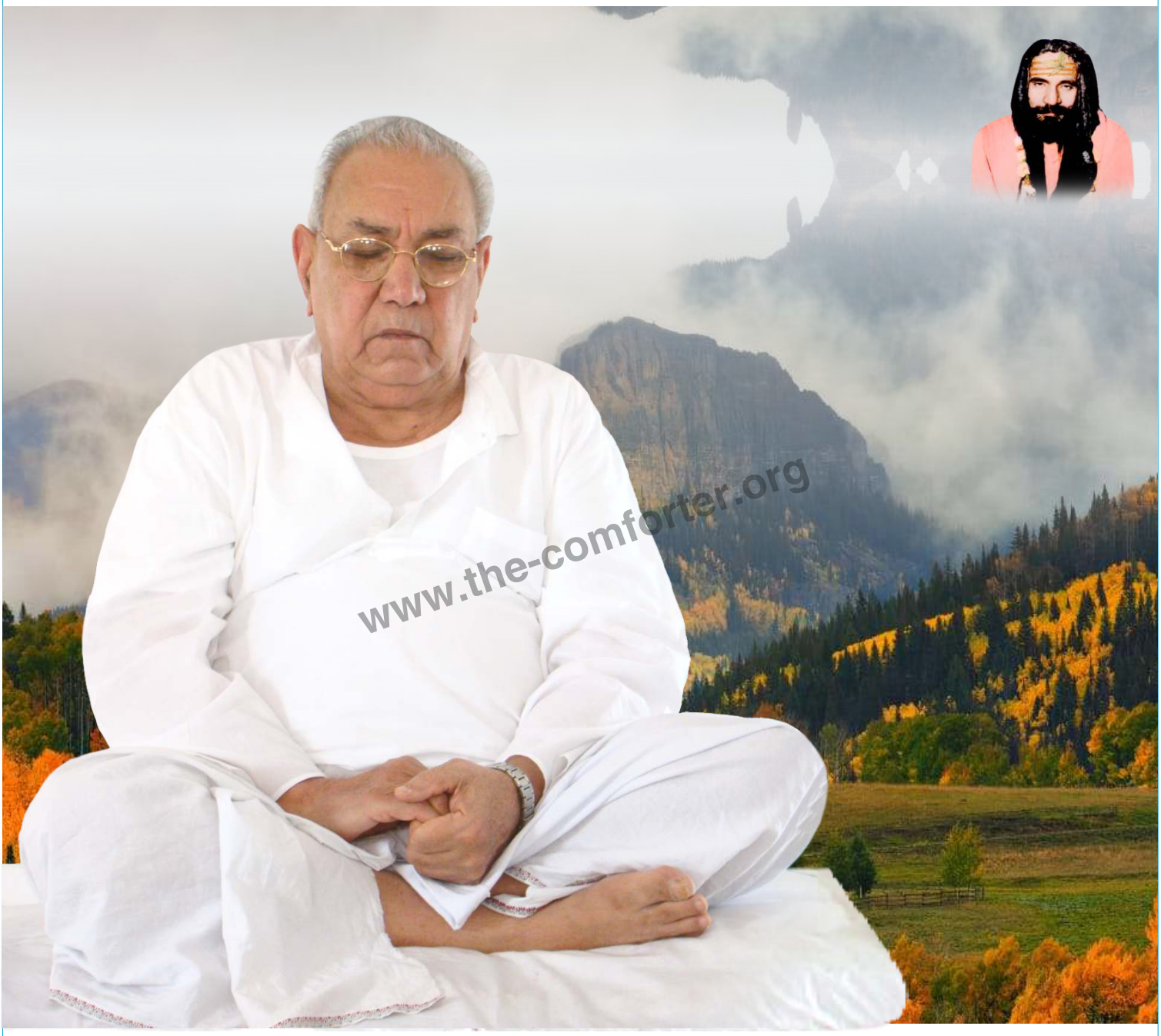

तीन लोक नौ खंड में, गुरु ते बड़ा न कोइ।
करता करै न करि सकै, गुरु करै सो होइ।।

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 13 अंक: 156 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका मई 2021

❖

संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖

सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office

Spiritual Science Magazine:

Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

इसमें बौद्धिक प्रयास कोई मायने नहीं रखता है। 4

कहानी - भक्त के वश में भगवान् 6

साधना विषयक बातें 14

साधक की अनुभूति 19

चेतना 21

सिद्ध-योगियों की महिमा 26

रूपान्तरण (Transformation) 30

युग परिवर्तन अनिवार्य है 34

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से 39

योग के आधार 41

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 43

ध्यान की विधि 46

इसमें बौद्धिक प्रयास कोई मायने नहीं रखता है।

आप चाहे शारीरिक कष्टों से परेशान हों या इस संसार की उठा-पटक से निराश होकर मानसिक तनावों से गुजर रहें हों या फिर नशे की लतों के कारण जिन्दगी की पटरी से उतर गए हों या ईश्वर मिलन की चाह से तड़प रहे हों, इन सब का सीधा सा उपाय है गुरुदेव से दीक्षा लेकर उनके बताए संजीवनी मंत्र का जाप और उनके चित्र पर ध्यान। केवल इतना करने मात्र से ही साधक उपरोक्त सभी परेशानियों से सहज में ही मुक्त होकर, शांत प्रफुल्लित जीवन जीते हुए कैवल्यपद को प्राप्त कर सकता है।

हमारे प्यारे गुरुदेव ने ईश्वर मिलन के मार्ग को बहुत ही सरल और सहज बना दिया है। इससे अधिक सरल कोई साधना नहीं हो सकती।

इस साधना में समस्या तब उठ खड़ी होती है जब हम गुरुदेव के आदेश के आगे अपना दिमाग लगाने लगते हैं। वर्षों से दिमागी कसरत की आदत से मजबूर हम यह सोचने लगते हैं कि गुरुदेव की बताई साधना तो ठीक है पर आगे और क्या कर सकते हैं? बस यहीं से गड़बड़ शुरू हो जाती है।

कुछ साधक गुरुदेव की साधना के साथ-साथ वर्षों से करते आए सभी कर्म-काण्ड भी करते रहते हैं, कुछ साधक तांत्रिकों के यहाँ चक्कर लगाते रहते हैं और उनके दिए ताबीज और डोरे आदि को पहन कर रखते हैं और कुछ तो ये कहते हैं कि हम कष्टों से मुक्तिके लिए तो गुरुदेव का मंत्र जपते हैं पर बाकि हमारे पहले के सभी मंत्र आदि वैसे ही चल रहे हैं। बहुत से साधक ऐसे भी हैं जो दीक्षा

www.the-comforter.org

लेते ही कहते हैं कि हमें किसी वाट्सएप ग्रुप से जोड़ दीजिए, वहाँ से भी ज्ञान मिलता रहेगा।

गुरुदेव की बताई साधना के साथ कुछ भी और जोड़ने का मतलब है अपनी बुद्धि का प्रयोग और गुरुदेव के सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास की कमी, अन्यथा हम गुरु आज्ञा के अतिरिक्त कुछ भी और करने की कैसे सोच सकते हैं?

यह सब इसलिए होता है क्योंकि मनुष्य आसानी से यह विश्वास ही नहीं कर पाता कि केवल और केवल गुरुदेव की आज्ञा का आँख मूंद कर पालन करने मात्र से उसकी नईया पार हो जाएगी। उसे हर बात में अपना दिमाग लगाने की सदियों से आदत जो पड़ चुकी है। संसारिक दौड़ के अभ्यस्त कई साधक यहाँ भी बहुत जल्दी में होते हैं। उनका प्रश्न यह होता है कि और क्या-क्या करूँ जो मेरी आध्यात्मिक यात्रा और जल्दी आगे बढ़े।

जिस यात्रा का पूरा दायित्व गुरुदेव ने स्वयं अपने ऊपर ले रखा है उसमें इसकी आवश्यकता ही कहाँ रह जाती है? जरूरत है तो केवल निष्ठा से सघन मंत्र जाप और ध्यान करते हुए गुरुदेव के प्रवचनों को बार-बार ध्यान से सुनने की। इतना करने भर से आपको अपने सभी प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगें।

गुरुदेव ने स्वयं कहा है कि इस साधना में बौद्धिक प्रयास कोई मायने नही रखता है, इसमें जो कुछ भी होगा वो अपने आप आपके अन्दर से होगा, वो भी अगर आप मंत्र जपोगे तो।

समझने वाली बात यह है कि जब 'अपरा विद्या' ग्रहण करने के लिए हम पहली से लेकर अन्तिम कक्षा तक अपने अध्यापकों पर विश्वास करते हैं तो फिर 'परा विद्या', जिसका हमें जरा भी ज्ञान नहीं है, उसके लिए हम अपना दिमाग कैसे लगा सकते हैं? गुरुदेव की शरण में होकर उनके आदेशों का अक्षरतः पालन करना ही हमारा एकमात्र कर्तव्य है।

◆◆◆◆

www.the-comforter.org

कहानी

भक्त के वश में भगवान्

जड़ से परम चेतना का प्रकटीकरण

पंजाब के एक गाँव में एक जाट परिवार रहता था। उनके लड़के का नाम था- धनीराम, परन्तु गाँव वाले उसे 'धन्ना' के नाम से पुकारने लगे। जब धन्ना बारह साल का हुआ, तब उनके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। माताजी के साथ वह घर में अकेला ही रह गया।

एक दिन शाम को कोई राहगीर पण्डित धन्ना की चौपाल में ठहर गया। प्रातः उसने स्नान किया और शालिग्राम का पूजन किया। प्रसाद चढ़ाया। जब धन्ना को भी प्रसाद दिया, तब वह बोला- पण्डित जी महाराज-'अपने ठाकुरजी मुझे दिये जाओ।'

'क्यों?' आश्चर्य के साथ पण्डित जी ने प्रश्न किया।

'आपकी तरह मैं भी पूजा किया करूँगा।' बालक बोला।

'अभी तुम बहुत छोटे हो।'

'छोटे लड़कों की पूजा, क्या ठाकुरजी मंजूर नहीं करते हैं?'

'नहीं, यह बात तो नहीं है। ध्रुव-प्रहलाद भी तो लड़के ही थे, उनकी पूजा भी ठाकुरजी ने खूब मंजूर की थी।'

'तब मुझे ठाकुरजी दिये जाओ। नहीं तो आपको जाने नहीं दूँगा।' बालक 'धन्ना' ने हठ पकड़ लिया।

पण्डित जी ने विचार किया कि लड़का हठ नहीं छोड़ेगा। उधर अपने ठाकुरजी वे दे नहीं सकते थे। कुछ सोच विचार कर झोले से एक लंबा 'भँगघुटना' निकाला जो काले पत्थर का बना हुआ था। सोचा कि यही देकर बला टालनी चाहिये। भांग घोटने के लिये हम कहीं से दूसरा 'भँगघुटना' दो चार आने में खरीद लेंगे।

नहीं मानते हो तो यह लो। कहकर पण्डित जी ने वह काला 'भँगघुटना' धन्ना को पकड़ा दिया।

धन्ना बहुत खुश हुआ! बोला-'मेरे ठाकुरजी तुम्हारे ठाकुरजी से बहुत ही बड़े हैं।'

'हाँ-बड़े ठाकुरजी बड़ा फायदा पहुँचाते हैं।'

www.the-comforter.org

धन्ना बोला-'इनकी पूजा कैसे करूँगा?'

पण्डित जी ने बताना शुरू किया-स्नान करके इनको भी स्नान कराना। पाँच फूल चढ़ाना। जब रोटी खाओ, तब थाली इनके सामने रखकर कहना-'भगवान्! भोग लगाओ।' उसके बाद तुम भोजन करना।

लड़के को झांसा देकर पण्डित जी चले गये।

जब दोपहरी हुई, तब धन्ना अपने खेत से घर लौटा। उसको पण्डित जी की बताई पूजा पाठ की याद आई। उसने सर्वप्रथम स्नान किया। फिर बड़े प्यार से सहलाते हुए शीतल जल से ठाकुरजी को भी एक बालक की तरह नहलाया और एक साफ-सुथरे आले में रख दिया। फिर उनके आगे पाँच फूल रख दिये। तब तक उनकी माताजी ने उसे आवाज दी और थाली में दो बाजरे के टिक्कर रख दिये। धन्ना थाली लेकर अपनी कोठरी में पहुँचा। उसने उस 'भंगघुटना' के सामने थाली रख दी। एक लोटा भरकर पानी रख दिया और कहा 'भगवान्! भोग लगाओ।'

थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह उठकर देखता कि थोड़ी-बहुत रोटी कम हुई या नहीं। मगर रोटी कम होने का कारण तो कोई था ही नहीं। जब भगवान् ने धन्ना की बाजरे की रोटी नहीं चखी, तब धन्ना बोला-'जब तक तुम थोड़ी बहुत भी रोटी न निगलोगे, तब तक मैं भी कुछ नहीं खाऊँगा।' उस दिन वह निराहार रहा! दूसरे दिन भी रोटी लाया, परंतु भँगघुटने ने रोटी नहीं खायी। धन्ना ने भी रोटी नहीं खायी। इस प्रकार सात दिन गुजर गये। वह रोटी, शाम को धन्ना अपनी भैंस को खिला देता था।

आठवें दिन ज्यों ही थाली आयी, त्यों ही विष्णु भगवान् एक बालक का रूप

बनाकर प्रकट हो गये। उन्होंने देखा कि धन्ना प्राण छोड़ देगा, परंतु हठ नहीं छोड़ेगा।

'वाह भगवान्, वाह ! पण्डितजी की जुदाई का इतना सदमा पहुँचा कि सात दिन तक आपने रोटी का एक कौर तक नहीं तोड़ा।' धन्ना ने बड़े प्यार से कहा।

'नहीं धन्ना, मेरे सिर में दर्द था।' कहकर भगवान् बाजरे की रोटी खाने लगे।

भगवान् का स्वभाव है कि वे सरल पर प्रसन्न रहते हैं और ज्ञानी और तार्किक से साढ़े तीन कोस दूर। बात यह है कि शिक्षित और ज्ञानी के सिर पर तीन भूत सवार रहते हैं-शंका, तर्क और आलोचना। ये तीनों भूत-भक्ति, ज्ञान और निश्चय को समीप नहीं आने देते। उधर भगवान् रहते हैं-'दृढ विश्वास' के मन्दिर में।

जब भगवान् ने एक रोटी खा ली, तब धन्ना बोला- 'बस-बस-बस ! एक रोटी तो मेरे लिये भी छोड़ो ! मेरी माता इतनी गरीब है कि वह मुझे दो रोटी से ज्यादा नहीं दे सकती।'

इतना कहकर मासूम लड़के ने थाली अपनी तरफ खिसका ली।

भगवान् बैठे थे और धन्ना रोटी खा रहा था।

पानी पीकर धन्ना ने कहा-'अब क्यों बैठे हो। जाते क्यों नहीं ? कल फिर इसी समय रोटी मिलेगी।'

'मैं तुम पर बहुत खुश हूँ-धन्ना ! कुछ माँगो !' क्योंकि भगवान् 'मासूमियत' पर आशिक हो जाते हैं। सरलता के सागर में ही भगवान् शयन करते हैं।

कुछ सोच-समझकर धन्ना ने कहा-'मैं अभी लड़का हूँ। खेती के काम के लिये एक ऐसा नौकर दीजिये कि जो रोटी खाने के अलावा कुछ तनख्वाह न माँगे।'

'ऐसा नौकर तो मैं ही हो सकता हूँ।' भगवान् ने मन में सोचा।

एक दिन राजा दशरथ ने भगवान् से कहा था 'मुझे आप-सा एक पुत्र चाहिये।' भगवान् ने सोचा-'मुझ-सा पुत्र तो मैं ही हूँ !'

आज धन्ना ने भगवान् से कहा-'बिना तनख्वाह का नौकर चाहिये।' भगवान् ने सोचा-'मैं ही ऐसा स्वयंसेवक हूँ।'

वे बोले-'कल नौकर आ जाएगा !'

www.the-comforter.org

यह कहकर भगवान् अन्तर्धान हो गये।

पाँच साल बाद वही पण्डितजी फिर धन्ना की चौपाल में रात को ठहर गये।

प्रातः पण्डितजी ने देखा कि वही लड़का घर में से निकला, जिसे वे भँगघुटना थमा गये थे।

अब वह सत्रह वर्ष का नवयुवक था।

धन्ना ने भी पण्डित जी को देखा। वह लपक कर पण्डितजी के चरणों में दण्डवत् हो गया। बोला–'वाह गुरुजी ! पाँच साल बाद दर्शन दिये !'

हाथ पकड़कर पण्डितजी ने सामने बैठा दिया। बोले–'कहो बच्चा, मौज में रहे ?'

'खूब गुरुजी–बड़ी मौज है। आप जब पहले आये थे, तब हम गरीब थे। आपको एक मुट्ठी चावल भी न दे सकते थे। केवल एक बार में चार रोटियाँ बनती थी। दो मेरे लिये और दो मेरी माँ के लिये।'

पण्डितजी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा–'और अब ?'

धन्ना ने कहा–'वह सामने वाली तीन मंजिला कोठी मेरी है। कोठी के सामने पक्का तालाब देखते हो, जिसमें कमल खिले हैं, वह भी मेरा है। तालाब के उत्तरी किनारे पर मन्दिर है। उसी में वे भगवान् बैठे हैं जो आप मुझे दे गये थे।'

पण्डितजी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा और पूछा–'तो यह सब हुआ कैसे ? रुपया, पैसा, अनाज, पानी, दूध, दही की नदियाँ बह रही हैं। आखिर कैसे ?'

'उस समय पाँच बीघा बंजर जमीन थी। अब पचास बीघा जमीन का मालिक हूँ।'

'मगर यह सब हुआ कैसे ?'

'पाँच भैंसें, 116 गायें ! एक घोड़ी है।'

'आखिर यह छप्पर फटा कैसे ?'

'आपकी कृपा से मेरे परम पूज्य सद्गुरुदेवजी !' कहकर धन्ना ने चरण पकड़ लिये।

'अगर मेरे पास कृपा होती तो मैं अपने ही ऊपर कर लेता ?'

'आपने जो ठाकुरजी दिये थे न ! उन्होंने मेरी डूबती नैया किनारे लगा दी।'

'पर यह सब कैसे हुआ ?'

'आप जो ठाकुरजी दे गये थे, वे सात दिन आपकी जुदाई में इतने 'गमगीन'

www.the-comforter.org

रहे कि रोटी का एक कौर भी न तोड़ा। मैंने भी कुछ न खाया। खाता कैसे? आपने कहा था कि 'भगवान् को खिलाकर खाना !'

'तो गुरुजी-आठवें दिन भगवान् आये। एक 'रोटी' खा गये। न जाने कितने दिनों के भूखे थे वे ! मैं रोक न देता तो दूसरा टिक्कड़ भी बचता नहीं।'

'क्या सचमुच में कोई आया था रे?' पण्डितजी का गला शंकासुर ने आ दबाया।

'आया था? वह कहीं गये नहीं !'

'कहाँ हैं?'

'खेतों पर काम करते हैं।'

'खेतों पर काम करते हैं !'

नौकर बनकर, भगवना नाम है !'

'भगवना? नौकर? क्या भाँग पीकर बैठा है?'

'गुरुजी ! तुमको दिन में भी नहीं सूझता है क्या? उसी भगवना ने पाँच साल में मुझे राजा बना दिया है !'

'क्या कहीं से धन लाकर दे दिया था?'

'नहीं जी-खेती की विद्या में वह मिडिल पास है ! अब जान लिया कि पृथ्वी ही सोना उगलती है !'

'अच्छा तो मुझे भी दिखलाओ। आज मैं कहीं न जाऊँगा। तुम्हारे भगवान् को देखूँगा !' पण्डित जी ने आसन बाँध लिया था, उसे खोल डाला।

'क्यों रे धन्ना ! तू मखौल तो नहीं कर रहा है?' पण्डितजी बोले। शंका, तर्क और आलोचना के तीनों भूत पण्डितजी से चिपक गये।

'आप नहीं मानते हैं तो चले जाओ कूएँ पर-वह चरसा चला रहा होगा।' धन्ना ने कहा।

नंगे पैर पण्डितजी भागे। गाँव के बाहर जाकर देखा कि 'कुएँ पर 'पुर' जरूर चल रहा है; परंतु न तो कोई बैलों को हाँक रहा है और न कोई पानी भरा चरसा ही थाम रहा है। दिखलायी कोई न पड़ा। मगर काम दोनों हो रहे हैं। मानो दो अदृश्य व्यक्ति अपने-अपने काम में तन्मय हैं ! बड़ी देर तक अलग खड़े-खड़े पण्डितजी अपने तीनों भूतों से पूछते रहे कि कौन-से साइंस से यह सब संभव है?

वापस लौटकर पण्डितजी ने धन्ना से

www.the-comforter.org

कहा –'कुएँ पर कोई आदमी नहीं है !'

'तो वह कोल्हू के लिये झाँकर इक्कठे करने जंगल में गया होगा।'

'क्या रसवाला कोल्हू ?'

'हाँ गुरुजी ! वहाँ जाइये। खूब तनकर रस पीजिये। गरमागरम मिठाई इतनी अच्छी लगती है कि शहर की बरफी क्या चीज ? कोल्हूवालों से पूछना कि भगवना कहाँ है ?

खोजते-खोजते पण्डितजी जंगल में गये। देखा कि उड़-उड़कर झाँकर अपने आप एक जगह जमा हुए और फिर वे अपने-आप कोल्हू की तरफ उड़ चले।

पण्डितजी ने अपने तीनों भूतों से पूछा-'यह घटना कौन-सी साइंस से संभव हो सकती है।'

वापस आकर पण्डितजी ने धन्ना से कहा-'वह न तो कोल्हू पर है और न ही जंगल में है।'

'तो जरूर हल चला रहा होगा। गाँव के दक्षिण में 100 कदम के फासले पर एक खेत गेहूँ के लिये तैयार हो रहा है। वहीं चले जाइये।'

पण्डितजी खेत की ओर दौड़े। देखा कि हल जरूर चल रहा है, मगर हलवाहा कहीं कोई दिखाई नहीं पड़ता।

घबराकर पण्डितजी के तीनों भूत भाग गये।

'वापस आकर पण्डित जी ने धन्ना के चरण पकड़ लिये।

'अरे गुरुजी ! यह क्या कर रहे हो ?' धन्ना बोला।

'मैं गुरु नहीं हूँ। गुरु तो तुम हो धन्ना भगत, जिसकी चाकरी भगवान् अनेक रूप धारण करके कर रहे हैं ! जिसकी खेती में इस तरह का तूफानी काम होगा, वह पाँच साल में अवश्य राजा ही हो जाएगा और दस साल में तो महाराजा

बन जाएगा ! मुझे भी भगवान् के दर्शन करा दो-धन्ना !'

'तो क्या आपको आज तक भगवान् का दर्शन हुआ ही नहीं ?'

'नहीं भगतजी ! सात जन्म में भी नहीं हुआ !'

'तो क्या आप भोग नहीं लगाते थे ?'

'भोग तो लगाता था-पर वे खाते-पीते कुछ न थे।'

'जब तक वे न खाते-आप भी न खाते।'

'यही तत्त्व तो इस खोपड़ी में नहीं उतरा था-भगतजी ! मेरे लिए भगवान से दर्शन देने की प्रार्थना करना !' पण्डितजी ने कहा।

धन्ना ने उन्हें आश्वासन दिया और उसी रात भगवान से उनके लिए बात की। धन्ना ने भगवान से कहा- 'भगवान् ! आज मेरे गुरुजी आये हैं। वे आपके दर्शन करना चाहते हैं। मैंने उनको वचन दिया है कि उन्हें आपके दर्शन हो जाएंगें।'

यह सुनकर भगवान ने कहा- धन्ना, मेरे दर्शन के लिए भक्त को तेरे जैसा सरल और निर्मल होना जरूरी है। शुद्ध मन और शुद्ध अन्तःकरण वाले भक्तजन मुझे अति प्रिय हैं। जो कोई सरल व प्रेम भाव से मेरी ओर एक कदम भी चलता है तो मैं उसकी ओर दस कदम खिंचा चला जाता हूँ। पंडित जी में न तो मन की सरलता है और न ही सच्चा प्रेम इसलिए उन्हें मेरे दर्शन नहीं हो सकते।

यह सुनकर धन्ना भगत उदास हो गया। भगवान से उसकी उदासी नहीं देखी गई। वह बोले- अरे भगत, तू क्यों उदास हो गया? धन्ना भगत बोला- 'भगवन् ! पंडित जी ने गुरु होकर भी आज आपके दर्शनों के लिए मेरे चरण पकड़ लिये और दर्शन पाने के लिये बार-बार आग्रह किया। मेरा वचन अब खाली जाएगा !

जब मैंने पण्डितजी से आपको (भगवान्) माँगा था तो उन्होंने मुझे बड़े प्यार से दे दिया था और इतना आग्रह तो मैंने भी नहीं किया था जितना कि गुरुजी आपके दर्शन के लिये कर रहे हैं। मेरे लिए आपको उन्हें दर्शन तो देने ही पड़ेंगे।

भगवान बोले- 'धन्ना तुम्हारे वचन का मान रखने के लिए मैं क्षणभर के लिये

www.the-comforter.org

पंडित जी को दर्शन दे दूँगा। उनसे कह देना कि कल आधी रात को दर्शन होगा।'

प्रातः धन्ना ने पण्डितजी को कह दिया कि आधी रात को आज भगवान् दर्शन देंगे।

पण्डितजी आधी रात तक बैठे रहे। जाड़े के दिन थे। एक कमरे में द्वार बंद करके पण्डितजी कंबल ओढ़े बैठे थे। आधी रात हुई। पण्डितजी ने देखा-गदा, पद्म, शंख, चक्र धारण किये चतुर्भुज रूप में भगवान् विष्णु सामने खड़े हैं। पण्डितजी ने हाथ जोड़ प्रणाम किया। सिर उठाया तो भगवान् अन्तर्धान हो गये।

प्रातःकाल हुआ, धन्ना घर से बाहर आया।

धन्ना गुरुजी के चरण पकड़ रहा था और गुरुजी चेले के चरण पकड़ने की धुन में थे।

हमारे प्यारे परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री सियाग मानव मात्र का कल्याण करने हेतु अपनी तस्वीर के दर्शन मात्र से भक्तों के समस्त दुख एवं कष्टों का हरण कर लेते हैं। एक मात्र सद्गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान लगना और एड्स व कैंसर सहित सभी प्रकार के असाध्य रोग ठीक होना विश्व विज्ञान के लिये एक बहुत ही विशाल स्तर पर शोध का विषय है। ◆◆◆◆

www.the-comforter.org

साधना विषयक बातें

गतांक से आगे...

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करें। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सके।

---

www.the-comforter.org

यह है ऊर्ध्व चेतना का सोपान-इस चेतना के अनेक Plane या स्तर हैं, इस सोपान में स्तर-पर-स्तर पार करते हुए अंत में हम Supermind (अतिमानस) में भगवान् के सीमाहीन आलोकमय, आनन्दमय, अनंत में उठते हैं।

जब अज्ञान का मिथ्यात्व उठता है तब पथ ढक जाया करता है-इसका उपाय है इस मिथ्यात्व पर विश्वास न करना, इस Suggestion (सुझाव) को Reject (परित्याग) करना कि यह सब सत्य नहीं हो सकता। बाधाएँ हैं तो क्या हुआ, सीधे पथ पर बढ़ते चलो, अंततः बाधाएँ झड़ जायेंगी।

यह है बाहरी गड़बड़ी का फल। शरीर पर आक्रमण-शांतभाव से, अपने में संयत रह उसे दूर करना होगा।

बाहर प्रिय या अप्रिय जो कुछ घटे, सब समय अविचलित रहना, भीतर शक्ति के साथ युक्त रहना-यह तो अच्छी बात है। ऐसी ही अवस्था साधक के लिये उचित है।

अभी भी शरीर बाहर के साधारण influence (प्रभाव) से ऊपर नहीं उठा है-सर्दी, वर्षा, ठंड, नम हवा का फल है यह। किन्तु शरीर शक्ति की ओर खुला है, उस शक्ति को पुकारने से ये सब बाहरी स्पर्श शीघ्र ही पुंछ जाते हैं।

प्रश्नः- मेरे अंदर अब और दुःख, रोना, हताशा, मर जाऊंगी, चली जाऊंगी, श्रीमां मुझे प्यार नहीं करती आदि मानव प्रकति की चीजें प्रवेश नहीं कर पा रहीं। यदि कभी आ भी जायें तो न जाने कौन मुझे सचेत कर जाता है और मैं एक छोटे शिशु की तरह शक्ति को पुकारने लगती हूँ और हृदय की गहराई में जाती हूँ।

It is very good- (यह तो बड़ी अच्छी बात है)। इस तरह चलते रहने पर मानव-प्रकृति की ये सब पुरानी पड़ गयी movements (गतिविधियां) झड़ जायेंगी, फिर लौटकर नहीं आयेंगी।

प्रश्नः- अब मैं अनुभव करती हूँ कि तुम मेरे भीतर से काम करती हो और मेरे भीतर हो। आजकल कोई यदि काम के लिये बक-झक करे तो मैं शांत रहती हूँ और सतर्क हो भीतर के आनंद से काम करने की चेष्टा करती हूँ। किंतु कभी-कभी बाहरी और मानवी प्रकृति की चीजें आ मुझे घेर लेती हैं, तब मैं घपले में पड़ जाती हूँ। चिंता और चंचलता अनुभव करती हूँ और तुम्हें भूल जाती हूँ।

उत्तरः- This also is very good- (यह भी बहुत अच्छी बात है)। बाहरी प्रकृति और भूलना है स्वभाव की आदत के कारण। किंतु इस भीतरी भाव को यदि सर्वदा यत्न से बनाये रखो तो ये सभी आदतें झड़ जायेंगी, फिर पास नहीं फटकेंगी। वास्तविक चेतना की Movements

www.the-comforter.org

(गतिविधियाँ) ही मन-प्राण की natural habits (स्वभाव) बन जायेंगी।

हमने तुम्हें छोड़ नहीं दिया है। जब depression (निराशा) आता है तब तुम ऐसी बातें करती हो। रह-रह कर तुम बाहरी चेतना में आ जाती हो और शक्ति को अनुभव नहीं करती। इसीलिये ऐसा नहीं सोचना चाहिये कि शक्ति ने तुम्हें छोड़ दिया है।। पुनः भीतर पैठो, वहाँ उन्हें feel (अनुभव) करोगी।

जब चेतना physical (भौतिक) में उतरती है तब ऐसी अवस्था होती है। इसका यह अर्थ नहीं कि साधना का सारा फल व्यर्थ गया है या ऊपर चला गया है। सब कुछ है पर आवरण की आड़ में हो गया है। इस obscure physical (अंधकारमय भौतिक) में भी चेतना, प्रकाश और शक्ति को उतारना चाहिये-जब वह प्रतिष्ठित हो जायेगी तब फिर वह अवस्था लौट कर नहीं आयेगी। यदि विचलित होओ, निराश होओ या ऐसे विचार प्रवेश करें कि अब मेरा इस जीवन में कुछ नहीं होगा, मरना ही अच्छा है, आदि, तब चेतना प्रकाश और शक्ति के उतरने की राह में बाधा बनकर खड़ी हो जाती है। अतः इन सबको बहिष्कृत कर शक्ति पर निर्भर रहते हुए शांत भाव से अभीप्सा करना और उन्हें पुकारना उचित है।

शक्ति ने तो तुम्हारे बारे में ऐसा कुछ नहीं कहा। यह बात ठीक है कि हर एक को शक्ति ने एक मुख्य काम दिया है, वही है प्रधान कार्य। उसके बाद बच रहे समय में वे जो कुछ करना चाहे वह अलग बात है। असल बात है, बाहरी कुछ न चाहते हुए, शक्ति के चरणों में समर्पण करते हुए सब काम right spirit (सही भावना) से करना चाहिये।

यह सीधा आलोकमय पथ ही है असली पथ। पर हां, उस तक पहुँचने में समय लगता है। एक बार इस पथ पर पहुँच जाने पर और कोई खास

www.the-comforter.org

कष्ट, बाधा या स्खलन नहीं होता।

मैं बता चुका हूँ कि क्यों हठात् और संपूर्णतः नहीं हो जाता-बाह्य physical consciousness

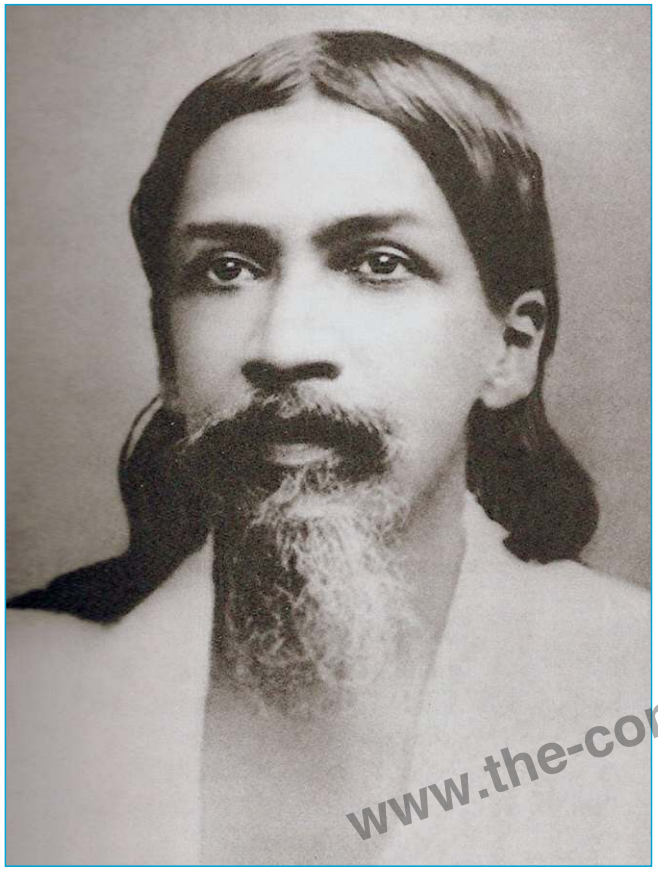

(भौतिक चेतना) के ऊपर उठ आने के कारण सभी की ऐसी अवस्था होती है। तब धैर्य के साथ उस अवस्था में शक्ति की चेतना को उतारना होता है, ज्यादा समय लगे भी तो कोई हानि नहीं। रूपांतर तो बहुत कठिन और महान् काम है, उसमें समय लगना स्वाभाविक है। धैर्य रखना चाहिये।

यह सच है कि बाहरी मन, आँख, मुँह को अपना न मानते हुए सब कुछ शक्ति को देना होता है ताकि सब उसके ही यंत्र बनें, और कुछ नहीं।

ये विलाप और आक्रोश तामसिक अहंकार के लक्षण हैं-मैं नहीं कर सकती, मैं चली जाऊंगी आदि कहने-सोचने से बाधाएँ और भी घनी हो उठती हैं। तामसिक अवस्था की वृद्धि करती हैं, इससे साधना में उन्नति के लिये कोई सहायता नहीं मिलती। मैं तुम्हें यह बार-बार लिख चुका हूँ। असली बात एक बार और लिख रहा हूँ। तुम्हारी साधना नष्ट नहीं हुई है, जो पाया है वह खो नहीं गया है, सिर्फ पर्दे के अंतराल में हो गया है। साधना करते हुए एक समय ऐसा आता है जब चेतना एक ही physical plane (भौतिक स्तर) पर उतर आती है। तब भीतरी सत्ता पर, भीतर की अनुभूतियों पर एक अप्रवृत्ति और अंधकार का परदा पड़ जाता है, ऐसा

www.the-comforter.org

लगने लगता है कि साधना-वाधना कुछ नहीं है, Aspiration (अभीप्सा) नहीं, अनुभूति नहीं, मां का सान्निध्य नहीं, नितांत साधारण मनुष्य की तरह हो गयी है। ऐसी अवस्था सिर्फ तुम्हारी ही हुई हो सो बात नहीं, सभी की ऐसी होती है या हुई है या होगी। यहां तक कि श्रेष्ठ साधकों की भी ऐसी अवस्था होती है। पर वास्तविकता तो यह है कि यह साधना-पथ का एक passage (पड़ाव) मात्र है, यद्यपि बड़ा लम्बा पड़ाव। ऐसी अवस्था न होने पर पूर्ण रूपांतर नहीं होता। इस स्तर पर उतर, वहां स्थिर रह श्रीमां की शक्ति की लीला को, रूपांतर के काम को पुकारना होता है। धीरे-धीरे सब साफ हो जाता है, अप्रकाश के बदले दिव्य प्रकाश, अप्रवृत्ति के बदले दिव्य शक्ति और अनुभूतियों का प्रकाश होता है सिर्फ भीतर ही नहीं, बाहर भी। सिर्फ ऊँचे स्तर पर नहीं, निम्न स्तर पर भी, शरीर की चेतना में, अवचेतना में भी होता है। और जिन सब अनुभूतियों पर परदा पड़ गया था वे सब बाहर निकल आती हैं। इन सभी स्तरों को भी अपने अधिकार में कर लेती हैं। पर ऐसा सहज ही और शीघ्र नहीं होता, धीरे धीरे होता है-चाहिये धैर्य, चाहिये शक्ति पर विश्वास, चाहिये दीर्घकालव्यापी सहिष्णुता। जो भगवान् को चाहता है उसे भगवान के लिये कष्ट स्वीकार करना पड़ता है। जो साधना करना चाहता है उसे साधना-पथ की कठिनाइयों, कष्टों और विपरीत दशा को सहना पड़ता है। साधना में केवल सुख और विलास चाहने से नहीं चलेगा। बाधाएँ व विपरीत अवस्था आती हैं। कहीं रोने-धोने और निराशा का पोषण करने से नहीं चलेगा। उससे पथ और भी लंबा हो जाता है। धैर्य चाहिये, श्रद्धा चाहिये और चाहिये शक्ति पर पूर्ण निर्भरता।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

साधक की अनुभूति

मेरे परम आराध्य प्रभु जी समर्थ सदगुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग जी के श्री चरणों में एवं दादा गुरुदेव बाबा श्री गंगाई नाथ जी के श्री चरणों में मेरा कोटि-कोटि प्रणाम। मैं 20 फरवरी 2014 से प्रभु जी श्री गुरुदेव की साधना कर रही हूं। मेरे परिवार पर गुरुदेव की अपार अनन्त असीम कृपा है। मैं शारीरिक रूप से अस्वस्थ थी। मुझे माईग्रेन, ऑस्टियोपोरोसिस, हाईपरएसिडिटि, कब्ज था और 23-10-2016 को कमर में भयानक तकलीफ हो गई। L&4, L&5 displace (Lumbar Spondylosis) हो गई थी। डॉक्टर ने कहा मैं 6 महीने तक बिस्तर से नहीं उठ सकती।

मैं नियम से नाम जप एवं ध्यान करती थी जब कमर की तकलीफ हुई तो मैं लेट कर ही ध्यान और मंत्र जाप कर रही थी। 06-11-2016 को सुबह 4:00 बजे ध्यान के दौरान Spinal Cord में Vibration हुए और एक टक की आवाज हुई मानो गुरुदेव ने ऑपरेशन करके हड्डी को सेट कर दिया। 08-11-2016 को गाड़ी में बैठकर 3 घंटे का सफर किया पर मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई। परम दयाल प्रभु श्री गुरुदेव जी की कृपा से मैं स्वस्थ हो रही हूँ। मैंने कोई दवा नहीं ली।

24-12-2019 को मेरी सासु मां को शरीर के दाहिने तरफ लकवा हुआ और Brain में Clot जम गया था। जिसको मेडिकल भाषा में Ischemic stroke कहते हैं। डॉक्टर ने कहा यह बोल नहीं पाएंगीं। इनकी नसें मर चुकीं हैं। माँ गुरुदेव की आराधना करती थीं, उनको होश नहीं था, बोली बंद हो गई थी। ICU में मोबाइल ले जाना मना था, मैंने छुप कर उनको मंत्र

www.the-comforter.org

सुनाया तब गुरुदेव गुरुदेव बोलने लगीं। फिर तीसरे दिन C T S बंद हुआ तब डॉक्टर ने कहा अब सुधार है, Clot बढ़ा नहीं है। मां हाथ-पैर स्वयं उठाने लग गई और अस्पताल से 7वें दिन घर आ गईं। डॉक्टर और नर्स बोल रहे थे कि यह पहला Neuro Patient है जो इतनी जल्दी Recover किया है। मां को अस्पताल में जब सुबह-शाम ध्यान करवाया और बार-बार मोबाइल से मंत्र सुनाया तब मां के साथ अस्पताल में मैं भी ध्यान करती थी, उस समय गुरुदेव की सकारात्मक ऊर्जा विशेष रूप से अनुभव कर रही थी। माँ 45 दिन में बिल्कुल स्वस्थ हो गईं। उनकी उम्र 90 के करीब है, आज मां अपना नित्यक्रम स्वयं करती हैं और लाठी के सहारे से एक तल्ला चढ़ जाती हैं। कोई दवा नहीं ले रही हैं, उनकी 4000 रुपये की दवा चल रही थी। मां कहती हैं गुरुदेव मुझे शक्ति दे रहे हैं, उन्होंने डॉक्टर से बिना पूछे दवा भी बंद कर दी।

मेरे पतिदेव 35 साल से शराब पी रहे थे, उनको भी मंत्र जाप और ध्यान करवाया। इन्होंने 09-08-2017 से शराब छोड़ दी। शराब छोड़ने के बाद में कोई साइड इफेक्ट नहीं हुआ। वो भी गुरुदेव का नाम जप और ध्यान करते हैं।

प्रभु श्री गुरुदेव जी के द्वारा दिया गया संजीवनी मंत्र संजीवनी बूटी की तरह काम करता है। पूज्य गुरुदेव इस ब्रह्माण्ड के सर्वोत्म डॉक्टर हैं। मैं समर्थ सदगुरुदेव के चरणों में ऋणी हूँ।

धैर्य, श्रद्धा और पूर्ण विश्वास के साथ समर्पण भाव से समर्थ सद्गुरुदेव का ध्यान एवं नाम जप करने से ही गुरुदेव की दिव्य कृपा प्राप्त होती है। सिद्धयोग की साधना से मानव मात्र का सर्वांगीण विकास संभव है। जय समर्थ सद्गुरुदेव। गुरुदेव के श्री चरणों में मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।।

नाम- कंचन शर्मा,
रांची, झारखंड

www.the-comforter.org

चेतना

–श्री अरविन्द

एक महत्त्वपूर्ण निर्णय करने की आवश्यकता पड़ने पर एक बार श्री अरविन्द के एक शिष्य ने परामर्श के लिए उन्हें लिखा, पर जब जवाब में उसे 'अपनी चेतना के शिखर पर' निश्चय करने के लिए कहा गया तो वह बड़ी उलझन में फंस गया। वह शिष्य यूरोपीय था और सोच में पड़ गया कि हे भगवान्, भला इसका क्या मतलब हो सकता है ! क्या यह 'चेतना का शिखर' विचार करने की कोई बलपूर्ण विधि है, अथवा सिर बहुत गर्मा जाने पर किसी तरह का जोश है, या और क्या हो सकता है ? क्योंकि पश्चिम इस एक ही तरह की चेतना से परिचित है।

कहने का तात्पर्य यह है कि यूरोपीय के लिए चेतना सदा ही एक मानसिक प्रणाली है –मैं सोचता हूँ, अतः मेरा अस्तित्व है। यह एक विशेष दृष्टिकोण है; मनुष्य अपने आपको विश्व के केन्द्र में बैठा लेता है और जो कोई जीवन और संवेदना की उसकी शैली के साथी हैं, उन्हें वह चेतना से युक्त मानने को तैयार हैं। कुछ समय पूर्व तक यूरोपियों को उस बात पर आश्चर्य होता था कि कोई फारसी भी हो सकता है। परन्तु यदि हमें चेतना क्या है, यह जान उसको खोजना है और उससे व्यवहार करना सीखना है, तब इस संकीर्ण दृष्टिकोण को पीछे छोड़ना आवश्यक है।

किसी हद तक मानसिक नीरवता प्राप्त करते ही श्री अरविन्द टिप्पणी कर सके थे, मानसिक चेतना तो केवल मानवीय क्षेत्र है और चेतना की संभव श्रेणियाँ उसमें उसी तरह समाप्त नहीं हो जाती जैसे मनुष्य की दर्शनशक्ति के साथ पूरे रंगों के स्तर अथवा श्रवणशक्तिके साथ ध्वनि के स्तर निःशेष नहीं हो जाते क्योंकि उसके ऊपर या नीचे बहुत कुछ है जिसे

www.the-comforter.org

मनुष्य देख और सुन नहीं सकते। सो मानवीय परिसर से ऊपर और नीचे चेतना की श्रेणियाँ हैं, जिनके साथ सामान्य मनुष्य का कछ भी संपर्क नहीं है और उसे वे अचेतन मालूम होती हैं-वे हैं अतिमानसिक, अधिमानसिक और अवमानसिक स्तर। जिसे हम 'अचैतन्य' कहते हैं, वह केवल अन्य-चैतन्य है। जैसे अपने आस-पास की तथा अपने शरीर की सुध-बुध खो, अन्दर ध्यानमग्न हो जाने पर, हम चेतना विहीन नहीं बन जाते, उसी तरह सुप्त, मूर्छित, विष द्वारा प्रभावित या 'मृत' अथवा अन्य किसी भी अवस्था में हम यथार्थतः चेतनाहीन नहीं होते। जिस किसी ने योगसाधना में थोड़ा भी मार्ग तय किया हो, उसके लिए यह एक बिल्कुल ही प्रारंभिक सत्य है।

श्री अरविन्द आगे कहते हैं, जैसे जैसे हम प्रगति करते जाते हैं और अपने तथा सब वस्तुओं के अन्दर आत्मा के प्रति सचेत होने लगते हैं, तो हम देखते हैं कि पौधों में, धातुओं, परमाणुओं और विद्युत् में, भौतिक प्रकृति से संबद्ध हरेक वस्तु में भी एक चेतना है। यहाँ तक कि वस्तुतः वह चेतना मानसिक चेतना-प्रकार की अपेक्षा सब बातों में निम्नतर या सीमित नहीं है। इसके विपरीत अनेक 'निर्जीव' रूपों में वह अधिक तीव्र, क्षिप्र, प्रखर है यद्यपि बाह्य स्तर पर कम विकसित है। अतः योगाभ्यास करने वाले साधक का कार्य है कि वह केवल मानस द्वारा नहीं बल्कि सब प्रकार से सचेत बने, अपनी सत्ता के सारे स्तरों पर और सार्वभौमिक सत्ता की सारी मंजिलों में; वह अपने अन्दर सचेत बने और दूसरों में तथा वस्तुओं में भी; जागते सचेत रहे और सोते भी; और अन्ततः वह उस अवस्था में भी सचेत बनना सीखे जिसे लोग 'मृत्यु' संज्ञा देते हैं क्योंकि जितना हम अपने जीवन में चेतना युक्त रहेंगे, उतना ही अपने मरण में भी होंगे।

परन्तु श्री अरविन्द के कथन मात्र

www.the-comforter.org

पर विश्वास कर लेने को हम बाध्य नहीं; वे जोर भी देते हैं कि हम स्वयं परीक्षण करें। अतः आवश्यक है कि हम उस चीज को सुलझायें जो हमारी सत्ता की विविध शैलियों-निद्रित, जाग्रत अथवा 'मृत' - को परस्पर

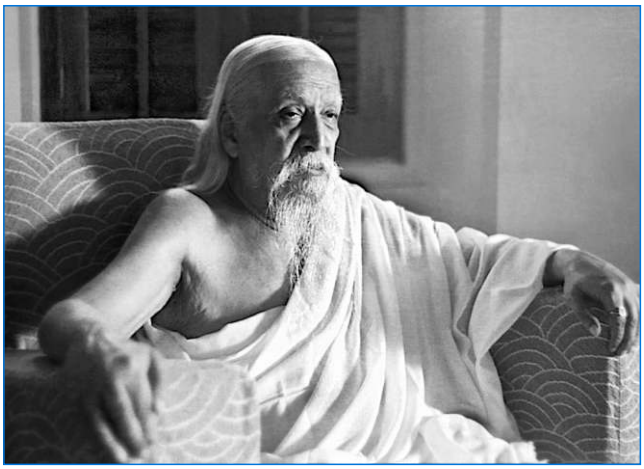

जोड़ती है और जिसके द्वारा चेतना के अन्य स्वरूपों के साथ संपर्क स्थापित करना हमारे लिए संभव होता है।

यदि हम मानसिक नीरवता पर आधारित अपनी प्रयोगात्मक विधि के अनुसार आगे बढ़ते जायें तो हम कई नवीन खोजों पर पहुँच जायेंगे। हमारे अन्दर कई स्तर अधिकाधिक स्पष्ट रूप से अलग-अलग दिखने लगते हैं मानो हम कुछ टुकड़ों से बने हों जिनमें हरेक का अपना व्यक्तित्व और बिल्कुल पृथक् केन्द्र है। और इससे भी अद्भुत बात यह है कि शेष सब से स्वतन्त्र हरेक केन्द्र का व्यक्तिगत जीवन है। यदि हम इसे यह संज्ञा दे सकें तो यह बहुस्वरता, बल्कि कहना ठीक होगा कि यह बेसुरी चीं-चीं, मानस की आवाज द्वारा दबाई जाती है जो सब पर छा जाता है और सब हड़प लेता है। हमारे अन्दर एक भी हरकत ऐसी नहीं, चाहे वह किसी भी स्तर की क्यों न हो, एक भी भावना, एक भी कामना, एक पलक झपकना तक भी ऐसा नहीं होता जिसे तुरंत ही मानस हथिया कर उस पर विचार का लेप न कर दे - अर्थात् हम हरेक चीज को मानसिक रूप दे देते हैं। और हमारे विकास के दौरान में मानस का यही बड़ा उपयोग है: वह हमारे अन्दर की उन सब वृत्तियों को ऊपरी सचेत सतह पर लाने में हमारी सहायता करता है, जो अन्यथा अवचेतन या अतिचेतन अकल्पित गारे की तरह ही पड़ी रह

www.the-comforter.org

जातीं।

इस अराजकता में कुछ व्यवस्था-सी बनाने में भी मानस हमारा सहायक होता है और इन सब छोटे-छोटे सामन्तों के बीच अपने आधिपत्य में भला-बुरा कुछ न कुछ सामंजस्य स्थापित करता है। परन्तु साथ ही वह उनकी आवाज और क्रियाविधि भी हमसे ओझल कर डालता है। आधिपत्य का अगला कदम तानाशाही है। अधिमानसिक यन्त्र पूरी तरह अवरुद्ध हो जाते हैं अथवा अतिचेतन की जो थोड़ी आवाज छन कर आ भी पाती है, वह तुरंत ही विकृत, क्षीण और अस्पष्ट बना दी जाती है। अवमानसिक यन्त्र दुर्बल हो जाते हैं और हम सहज वे इन्द्रियाँ गंवा बैठते हैं जो कि हमारे विकास की विगत एक अवस्था में बहुत उपयोगी रही थीं और अभी आगे भी काम की हो सकती थीं। दूसरे अल्पसंख्यक वर्ग विद्रोह कर उठते हैं और कुछ अन्य चुपके-चुपके अपनी क्षुद्र शक्ति संग्रह करने में लग जाते हैं ताकि पहला मौका मिलते ही हम पर टूट पड़ें। परन्तु जो साधक मानस को मौन कर चुका है, वह इन सभी अवस्थाओं को उनकी नग्न यथार्थता में, मानसिक आवरण से रहित, अलग-अलग देखने लग जायेगा और अपनी सत्ता के विविध स्तरों पर संकेन्द्रण-बिन्दु जैसे कुछ महसूस करेगा मानो वे शक्ति के अनेक बंध हों जिनमें प्रत्येक अपनी एक निजी स्पन्दन-विशेषता अथवा आवृत्ति से युक्तहो। हम सभी को, कम से कम जीवन में एक बार तो विभिन्न स्पन्दनों का अनुभव हुआ ही होगा जो हमारी सत्ता की अलग-अलग ऊँचाइयों पर विकीर्ण होते हुए से मालूम पड़ते हैं।

उदाहरणतः दैवीज्ञान प्रकाशक एक महान् स्फुरण की अनुभूति, जब लगता है मानो हठात् पर्दा फाड़ कर सत्य का पूरा एक पहलू हमारे सामने खुल गया हो, शब्द एक भी नहीं, यह

www.the-comforter.org

भी ठीक-ठीक पता नहीं कि दैवीज्ञान की अभिव्यक्ति क्या हुई? केवल कुछ है जो थिरक रहा है और संसार को पहले से अधिक विशाल, हल्का और विशद बना रहा है, पर इसे समझाया नहीं जा सकता। अथवा हमें अधिक स्थूल स्फुरणों का अनुभव हुआ है: क्रोध या भय के स्पन्दन, कामना और सहानुभूति के स्फुरण; और हम अच्छी तरह जानते हैं कि भिन्न-भिन्न स्तरों पर, भिन्न-भिन्न तीव्रता के साथ यह सब फड़कता है।

इस प्रकार हमारे अन्दर स्पन्दन-ग्रन्थियों अथवा चैतन्य-केन्द्रों का पूर्णग्राम है जिनमें हरेक एक विशेष तरह के स्पन्दन पर पूर्णाधिकार रखता है। उन्हें हम अपनी नीरवता की कोटि और ग्रहणशक्ति की तीव्रता के अनुसार साफ पहचान और पकड़ सकते हैं। और मानस इनमें से केवल एक केन्द्र है, एक तरह का स्पन्द, चेतना का केवल एक रूप है यद्यपि वह सर्वोत्तम पद पर दावा जमाना चाहता है।

परम्परागत ज्ञान के अनुसार इन केन्द्रों का विस्तारपूर्वक वर्णन हम नहीं करेंगे-बताने से उन्हें स्वयं देखना कहीं अच्छा है-न ही बतायेंगे कि वे कहाँ स्थित हैं; ज्यों ही साधक थोड़ा पारदृश बन जायेगा, वह बिना किसी कठिनाई के स्वयं ही उन्हें अनुभव कर लेगा। हम तो केवल इतना ही बता देते हैं कि ये केन्द्र (भारत में उन्हें चक्र कहते हैं) हमारे भौतिक शरीर में नहीं बल्कि एक अन्य आयाम में अवस्थित हैं यद्यपि किसी किसी समय उनका संकेन्द्रण इतना प्रखर हो सकता है कि मनुष्य को एकदम ऐसा लगे कि वे भौतिक शरीर में ही स्थित हैं। सब नहीं पर उनमें से कुछ सचमुच ही हमारी परिचित विविध स्नायु-ग्रन्थियों से बहुत मिलते-जुलते हैं। मोटे तौर पर चार क्षेत्रों में विभक्त सात केन्द्र दिखाई दे रहे हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सिद्ध-योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

लल कर्म-काण्ड, मूर्ति- पूजा, तीर्थ- यात्रा आदि साधनाओं के विरुद्ध थी, ऐसा पहले कहा जा चुका है। वास्तविकता यह है कि साधन में, वह उन्नति के उस स्थान तक पहुँच चुकी थी, जहाँ यह सभी साधनाएँ महत्त्वहीन हो जाती हैं। जो जिस स्तर पर होगा, उसी के अनुरूप ही बात करेगा। पर्वत-शिखर के नीचे खड़े होकर, शिखर को देखने वाले तथा शिखर पर खड़े होकर नीचे देखने वाले को दिखाई देने वाले दृश्य में अन्तर तो होगा ही। पहले के जन्मों में लल भी यह सभी साधनाएँ करती रही थी किन्तु अब इन सब से बहुत आगे निकल चुकी थी। उसके हृदय में प्रेम तथा विरह की ज्वाला हर समय धधकती रहती थी। प्रभु-प्रियतम की याद हर समय बनी रहती थी। उसके पास यह सब साधनाएँ करने का समय ही नहीं था। कभी करने का प्रयत्न भी करती थी तो यह सब उसे झंझट दिखाई देते थे। प्रेम-भाव ने उसकी साधना के सभी स्वरूपों को निगल लिया था। यथार्थ बात यह है कि वह इन साधनाओं की नहीं, वरन् उनमें व्याप्त पाखण्ड तथा आडम्बर की विरोधिनी थी। उसकी अपनी वृत्ति अन्तर की ओर घूम चुकी थी तथा संसार के प्राणियों से भी, अपनी वृत्ति अन्तर की ओर घुमा लेने की अपेक्षा करती थी। उसने जो कुछ भी, जितना

www.the-comforter.org

कुछ भी प्राप्त किया था, अन्तर से ही किया था। जैसे-जैसे वह बाहर का त्याग करती गई, अन्तर में ऊपर की ओर चढ़ती गई। जगत् के लिए उसके समक्ष अन्तर का ही मार्ग था। ठीक भी है, जो कुछ भी प्राप्त होना है अन्तर से ही होना है।

वृत्ति को अन्तर की ओर मोड़ने के लिए विरह का महत्त्वपूर्ण स्थान है। संसार के प्रायः प्राणी ईश्वर से वियोग रूपी रोग से ग्रसित हैं किन्तु उन्हें वियोग की अनुभूति नहीं है। वह ईश्वर को भूले हुए हैं या उससे बिछड़े हुए हैं, इधर किसी का लक्ष्य ही नहीं है। वियोग तो है किन्तु वियोग का भान नहीं। उनका ईश्वर से वियोग होकर, असार संसार से योग हो गया है। ऐसे ही वियोग को माया कहा जाता है। योग मार्ग का प्रयोजन है कि जहाँ जीव का योग है वहाँ से वियोग करा दे तथा जहाँ उसका वियोग है वहाँ योग करा दे। किन्तु उससे पूर्व दो बातों का होना आवश्यक है। सर्वप्रथम जीव में वियोग की अनुभूति हो, वह ईश्वर से बिछुड़ गया है, उधर लक्ष्य हो अर्थात् जगत् के प्रति वैराग्य तथा ईश्वर के प्रति अनुराग हो। दूसरा मन में ईश्वर-प्राप्ति की तीव्र आकांक्षा हो। यह आकांक्षा बढ़ते-बढ़ते अग्नि रुप धारण कर लेती है। यही विरह है। वियोग की अनुभूति होने पर, विरह की तीव्रता तक, साधक कई प्रकार की साधनाएँ, उपासनाएँ करता है। कभी तीर्थ यात्रा करने निकल पड़ता है तो कभी अनुष्ठान अथवा योग साधना में प्रवृत्त हो जाता है। यह साधनाएँ लक्ष्य सिद्धि में भले सहायक न हों किन्तु साधक में जिज्ञासा को बलवती बनाने में इनका योगदान अवश्य है। यही जिज्ञासा आगे चल कर विरह का रूप ग्रहण कर लेती है। तब सभी साधनाएँ निरर्थक होकर गिर जाती है। साधक प्रयत्न करता है, बार-बार करता है, कई बार उठता-गिरता है। साधान में विफलताएँ, उसके सफलता रूपी

www.the-comforter.org

भवन के लिए आधार-नींव का कार्य करती हैं।

अन्ततः सभी प्रयत्न विरह के रूप में परिणित हो जाते हैं। साधन एवं प्रयत्न गौण होकर, निरन्तर बनी रहने वाली याद उभर आती है। वास्तव में सभी साधनाएँ, उपासनाएँ यौगिक प्रक्रियाएँ, पठन-पाठन आदि पुरुषार्थ विरहभाव जाग्रत करने के लिए ही हैं।

लल की यही स्थिति थी। जन्म-जन्मान्तर तक वैराग्य युक्त साधनाओं का अभ्यास करते-करते अपनी शक्ति, वृत्ति तथा लक्ष्य को अन्तर की ओर मोड़ कर, उसने तीव्र विरह की स्थिति को प्राप्त कर लिया। तभी तो लल ने कहा था, गुरु ने एक उपदेशात्मक वचन कहा था कि अब तू बाहर से अंदर की ओर जा, प्रेम का भाव अन्तर में होता है। विरह अन्तर की अग्नि है। ईश्वर भी अन्तर में ही है। उसकी अनुभूति भी अन्तर में होती है। लल का गुरु कहीं बाहर नहीं, अन्तर में था। बाह्य प्रयत्नपूर्वक साधनाओं का अभ्यास केवल जिज्ञासा वृद्धि करता है। बाहर से अन्दर जाने की क्रिया अन्तर्गुरु के आश्रित है। आन्तरिक आत्माभिमुखी उत्थान भी उसी के अधीन है। वही अन्तर में जाने की प्रेरणा देता है। वह बाहर से अन्तर की ओर धकेलता है। वही अन्तर से, अन्तर की ओर खेंचता है। वह अन्तर में अनुभवगम्य होता है। सब क्रियाएँ, सब विचार, सभी भाव अन्तर गुरु द्वारा अन्तर गुरु में पैदा होते हैं। वही प्रेम-अगन जलाता है, वही विरह पैदा करता है। कि ऐसा ज्ञात होता है कि उपरोक्त गुरु-वचन कहीं लिखने-समझने में भूल हो गई अथवा उसे उद्धरित करने वाले इसके भाव को नहीं समझ सके तथा उन्होंने लिखना आरंभ कर दिया कि बाहर से अन्दर की ओर जा। हमारे विचार में इसका शुद्ध स्वरूप होना चाहिए, बाहर से अन्तर की ओर आ, क्योंकि गुरु

www.the-comforter.org

अन्तर से अन्तर की ओर बुलाता है। अन्तर से अन्तर की ओर खींचता है। भौतिक स्थूलता का त्याग कर, आन्तरिक सूक्ष्मता की ओर बुलाता है। गुरु का आसन अन्तर में है तो बुलाएगा भी अन्तर से ही।

गुरु-ज्ञान गुप्त है । अन्तर का अनुभव है जिसे बाहर व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसलिए इसे गुप्त विद्याओं का राजा कहा गया है। यह प्रदर्शन या दिखावे की वस्तु नहीं। यदि प्रदर्शन किया जावेगा भी तो गुरु-ज्ञान नहीं रह जायेगा। ठीक है कि प्रवचनों में इसका ज्ञान कराने का प्रयत्न किया जाता है किन्तु यह समझने समझाने की बात ही नहीं। युक्ति-तर्क की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि यह अनुभवगम्य विषय है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

''आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।''

जड़तत्त्व को ऊर्जातत्त्व में परिणत करने के लिए विज्ञान को केवल अत्युग्र तापमान उत्पन्न करने की भौतिक प्रणालियाँ ही विदित हैं; किन्तु यदि हम मूलभूत अग्नि को जानते हों, जो कि ऊर्जातत्त्व अथवा चित्-शक्ति का निम्न आधार है तो सिद्धांत रूप में हम जड़तत्त्व का संचालन कर सकते हैं, और अपनी देह को एक मानुषिक मशाल की अवस्था तक घटाये बिना वही रूपांतरण हमारे लिए संभव हो जाता है।

इस प्रकार सन् 1926 की इस बातचीत से दो भौतिक तथ्य (और उनके आधारभूत आध्यात्मिक तथ्य) हमारे सामने आते हैं, जो रूपांतर की दृष्टि से अत्यंत महत्त्व रखते हैं। एक तो यह कि सभी पार्थिव रूप रचनाएँ, चाहे वे किसी भी प्रकार की क्यों न हों, उन्हीं समान संघटकों से निर्मित हैं, और उनके गुणधर्म भेद का एकमात्र कारण है अणुविन्यास की विभिन्नता। जगत् की दिव्य एकता के आध्यात्मिक सत्य का यह भौतिक प्रतिरूप है; संसार एक ही तत्त्व से, एक दिव्य तत्त्व से बना है - 'तू ही पुरुष और स्त्री है, तू बालक और बालिका है। जराजर्जर तू लाठी

www.the-comforter.org

के सहारे चलता है। नील और हरित विहग तू है, और यह लोहित वर्ण के नेत्रों वाला पक्षी भी तू ही है' (श्वेताश्वर उपनिषद्-4.3.4)। तत्त्व की इस एकता के बिना रूपांतर संभव ही न होता, क्योंकि हर बार एक नये तत्त्व को बदलना पड़ता। दूसरी ओर

जड़तत्त्व में अंतर्निहित, यह सौर अग्नि भौतिक प्रतिरूप है इस मूलभूत अग्नि का, जो कि-श्री अरविन्द ने इसी संभाषण में यह स्पष्ट कर दिया है - रूपाकृतियों की सृष्टि करती है। अग्नि का संचालन करने का अर्थ है आकृतियों में परिवर्तन करने की, जड़तत्त्व के रूपांतर की क्षमता - 'वह नर इस आनंद का रस नहीं ले सकता जो अभी अपक्व है और जिसकी देह अग्नि के तेज में तपायी नहीं गयी। वे ही इस आनंद को सहन करने की, इसका उपभोग करने की क्षमता रखते हैं, जिन्हें अग्निशिखा ने निष्पन्न कर दिया है', ऐसा ऋग्वेद में कहा है (९.८३.१)। हमारी देह में विद्यमान अपने भौतिक प्रतिरूप, न्यैष्टिक रज का तत्त्वांतरण यह तप्त सुवर्ण रज ही करेगी। श्री अरविन्द ने लिखा है, स्थूल प्रक्रिया की अपेक्षा सूक्ष्म प्रक्रिया कहीं अधिक बलवती होगी। फलतः वह कार्य, जिसके लिए अभी एक भौतिक परिवर्तन, यथा तापमान में वृद्धि की आवश्यकता पड़े, अग्नि की सूक्ष्म

क्रिया द्वारा संपन्न होना संभव होगा। ये जो हमारे अणु हैं, ये भी सनातन अनुष्ठान पद्धति का एक सुकर यंत्र ही हैं – कहीं कुछ अचल-अटल नहीं हो गया है, कुछ भी अनिवार्य नहीं है। संयोजन कितनी तरह से होना संभव है, इसकी कोई सीमा नहीं है ; अजर-अमर नव मानव का कहीं अंत नहीं है।

द्वितीय चरण (देह)

द्वितीय काल सन् १९२६ में आरंभ होकर सन् १९४० तक चला । यह देह और अवचेतन के अंदर वैयक्तिक कार्य का समय था। यहाँ हमें स्वयं चेतना के निमानसिक रूपांतर तक चले जाने के लिए सब संकेत प्राप्त हैं, कहीं तार नहीं और हमें रूपांतर का ये मूलसिद्धांत क्या है यह भी विदित है। ऋग्वेद में अग्नि ही है 'जो कार्य को करती है' (४.१.१४)। परन्तु यह अभी नहीं कहा जा सकता कि जड़तत्त्व में परिवर्तन लाने के लिए यह अग्नि किस प्रकार कार्य करेगी। इसका अभी पर्याप्त ज्ञान हमें प्राप्त नहीं है। श्री माँ कहती हैं कि यदि प्रक्रिया हमें ज्ञात होती तो वह कभी का हो चुका होता। अन्य सब सिद्धियों का भारतीय परंपरा बड़ी बारीकी से, ब्यौरेवार इतना सही विवरण देती है कि आश्चर्य हो आता है। निर्वाण की सिद्धि, विश्वव्यापी परम आत्मन् की उपलब्धि और जीवात्मन् के साक्षात्कार की, गुरुत्व, क्षुधा, शीत, निद्रा, व्याधि पर प्रभुत्व प्राप्त करने, स्वेच्छा या निज देह से बाहर निकलने और जीवन चिरकाल तक बनाये रखने की सब प्रक्रियाएँ ज्ञात हैं – कोई भी वहाँ तक जा सकता है; मार्ग जाने-बूझे हैं, सहस्रों वर्ष हुए ऋषियों-महर्षियों ने, हिन्दू शास्त्रों ने इनकी सब अवस्थाएँ खोल-खोल कर समझा दी थीं। रह गया प्रश्न

www.the-comforter.org

तप-संयम का, अध्यवसाय का - और सही समय का।

किन्तु रूपांतर, यह कभी किसी ने नहीं किया। रास्ते का एकदम पता नहीं है, मानो हम ऐसे प्रदेश के अंदर बढ़ रहे हों जो अभी अस्तित्व ही नहीं रखता। शायद ऐसा ही कुछ तब भी हुआ होगा जब जड़तत्त्व और जीवनतत्त्व के जगत् में मानस के प्रथम रूपों का आविर्भाव आरंभ हुआ था। एक अर्ध-पाशव जीव, जिसके अंदर पहलेपहल मानसिक स्पंदों ने प्रवेश किया, इस अपूर्व व्यापार को कैसे समझ पाता? इसका वर्णन करना, विशेषतया यह बताना कि विचार-शक्ति का प्रयोग करने के लिए क्या करने की आवश्यकता है, उसके लिए कहाँ संभव था? श्री माँ के ही शब्द हम फिर से उद्धृत करते हैं; हमें पता नहीं कि अमुक अनुभूति इस मार्ग का भाग है या नहीं, यह तक नहीं मालूम कि हमने प्रगति की है या नहीं, क्योंकि यदि हमें यह पता चल जाये कि हम आगे बढ़े हैं तो इसका अभिप्राय हो कि हम रास्ता जानते हैं - रास्ता है ही नहीं, वहाँ कभी कोई नहीं गया! वस्तुतः जब वह हो जायेगा तभी यह बताना संभव होगा कि वह क्या है।

क्रमशः अगले अंक में...

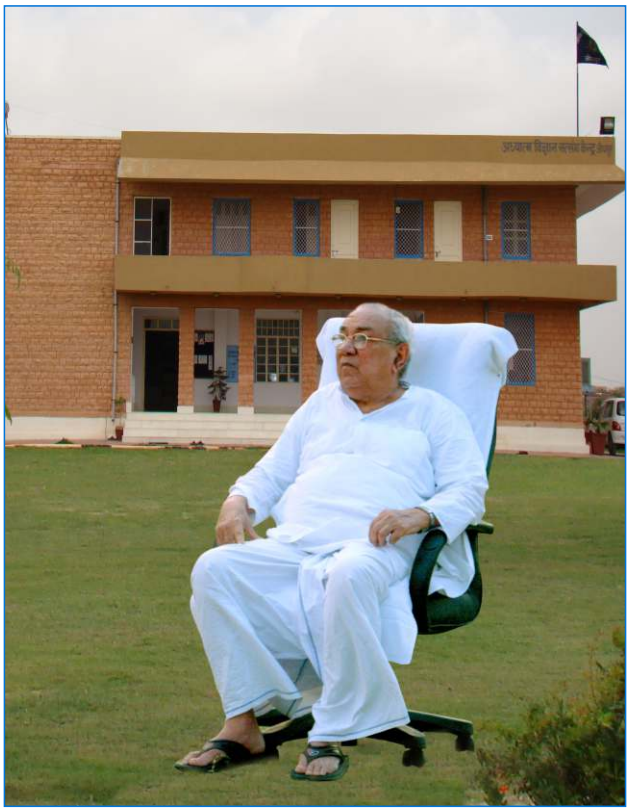

युग परिवर्तन अनिवार्य है

-सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

कालचक्र अबाध गति से निरन्तर चलता ही रहता है। संसार की हर वस्तु परिवर्तन शील है। शक्ति संतुलन ही शान्ति का द्योतक है। असंतुलन ही अशान्ति और दुःखों का कारण है। मानव जाति में आज जो अशान्ति नजर आ रही है, वह असंतुलन का ही कारण है। आज तो स्थिति यह है कि तामसिकता का पलड़ा बहुत भारी है।

संसार भर की राज सत्ता पर, वह शक्ति निरंकुश होकर एक छत्र शासन कर रही है। हम देख रहे हैं कि हमारे देश के सत्ताधारी वर्ग इसी प्रकार के तांत्रिकों का आशीर्वाद प्राप्त करने को भटकते रहते हैं। इस प्रकार तामसिकता के प्रभाव में उन्हें जो करना चाहिए, वही वे बेचारे करने को विवश हैं।

संसार में जब तक यह वर्ग सात्विक सत्ता के दिशा निर्देश से काम नहीं करने लगेंगे, तब तक शांति पूर्ण रूप से असम्भव है। तामसिक शक्तियाँ, चोर शक्तियाँ हैं। वे हमेशा नकली संत का भेष बनाकर धोखा देती हैं। सारी गड़बड़ ईश्वर की आड़ लेकर चल रही है। एक साधारण व्यक्ति भी कर्ण पिशाचनी की सिद्धि करके संसार को मूर्ख बनाकर एक सिद्ध पुरुष के रूप में ख्याति प्राप्त करके पूजा जा रहा है। तामसिकता का एक छत्र साम्राज्य होने के कारण लोगों की बुद्धि ऐसी भ्रमित कर रखी है कि वे भले बुरे की पहचान ही नहीं कर सकते। क्योंकि कुए में ही भांग पड़ी हुई है। अतः जिधर देखो उन्ही के झुण्ड नजर आते हैं। अब ऐसी तामसिक शक्तियों का अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका है। मैं ऐसे कई सज्जन लोगों से मिला हूँ, जब वे किसी संत के चमत्कारों की प्रशंसा करके उसके गुणों का बखान करते हैं

www.the-comforter.org

तो मुझे उन सीधे-साधे और ईश्वर के प्रति जिज्ञासु लोगों पर बहुत तरस आता है।

मैं चुपचाप सुनकर हँस देता हूँ। सभी घटी हुई घटना को इस प्रकार बताते हैं कि बेचारे भोले भाले लोग उनको अच्छा संत समझ कर, अच्छी भेंट पूजा करते हैं। कर्ण पिशाचनी अपने सीमित दायरे के अन्दर साधारण व्यक्ति के मन की बात जान कर, उस व्यक्ति को बताने में सक्षम होती है जिसके अधीन वह कार्य करती है।

अब वह तथाकथित संत जितना अधिक चतुर होगा उतना ही भौतिक लाभ उठाते हुए पर्दे के पीछे असलियत को छिपाये रखेगा। आध्यात्मिकता के नाम पर आज इसी शक्ति का बोलबाला है। अन्धों में काणा ही राजा होता है, ठीक वही हालत आज संसार में आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्वत्र व्याप्त है। ''धर्म प्रत्यक्षानुभूति का विषय है। इसमें उपदेश और अन्य भौतिक चमत्कार होते ही नहीं।'' जिस प्रकार सूर्य के निकलते ही अन्धकार पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है, और किसी को कुछ भी वस्तु दिखाने की जरूरत नहीं

होती, हर व्यक्ति स्वतः ही स्वयं हर वस्तु को देखने में सक्षम हो जाता है। उस परम सत्ता से जुड़े हुए संत के साथ क्षणभर ही सत्संग करने से मनुष्य के अन्दर ऐसी रोशनी प्रकट हो जाती है कि उसे बताने की कोई आवश्यकता ही नहीं होती। उसका पथप्रदर्शन स्वयं सात्विक शक्तियाँ करने लगती हैं। क्योंकि प्रकाश होने पर अंधेरा भाग

www.the-comforter.org

जाता है, ठीक वैसे ही उस व्यक्ति में सात्विक शक्तियों के चेतन होते ही तामसिक शक्तियाँ कोसों दूर भाग जाती हैं।

ऐसी स्थिति में जब उसे स्वयं सब दिखने लगता है तो फिर उपदेश किस काम का। उपदेश तो मात्र झूठी सांत्वना का नाम है। उपदेश तो क्षणिक लाभ का प्रलोभन मात्र है। मैं देखता हूँ, संसार के अरबों लोग उपदेश सुन चुके हैं। अगर उससे कुछ लाभ होता तो आज संसार की ऐसी बुरी हालत कभी नहीं होती।

इस युग की भौतिक सत्ता पर पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का अधिकार है। तामसिक शक्तियाँ अपने गुणधर्म के ही अनुसार उसका उपयोग कर रही हैं। यही कारण है कि भौतिक विज्ञान, प्राणियों के संहार के लिए काम में लिया जा रहा है। अगर संसार की राज सत्ता पर सात्विक शक्तियों का प्रभाव हो जाय तो स्थिति बिलकुल विपरीत हो जाएगी।

इस समय तो बन्दर के हाथ में उस्तरा आने वाली स्थिति है। तामसिक शक्तियों ने भौतिक और आध्यात्मिक जगत् के लोगों के बीच में ऐसी झूठी काल्पनिक लक्ष्मण रेखा खींच दी है कि एक दूसरे के क्षेत्र दो भागों में बाँट दिये।

संन्यासी लोग कहते हैं कि राज सत्ता को उनके क्षेत्र में बिलकुल हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं। दूसरी तरफ राज सत्ता के लोग खुला आरोप लगा रहे हैं कि धर्म गुरु राज सत्ता को प्रभावित करने के लिए धर्म का दुरूपयोग कर रहे हैं। इस प्रकार इन तामसिक शक्तियों ने दोनों वर्गों को अपने प्रभाव में लेकर, इतना भयंकर संघर्ष प्रारम्भ करवा दिया है कि किसी को समझने का अवसर ही नहीं देती है। तामसिक शक्तियों ने इस प्रकार संसार के जीवों को कष्ट देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

सारे संसार में जो ताण्डव नृत्य तामसिक शक्तियाँ करने लगी हैं

www.the-comforter.org

उसको देखने से ऐसा लगता है कि अब इनका अन्त बहुत निकट आ चुका है। हर कार्य की अति उसकी आखिरी सीमा होती है। श्री अरविन्द ने कहा है कि जब तक संसार की भौतिक सत्ता पर आध्यात्मिक सत्ता का शासन नहीं होगा, शान्ति असम्भव है। इस समय संसार के तथाकथित धर्माचार्यों और संतों ने तामसिक शक्तियों के प्रभाव के कारण पलायन वादी रुख अपना रखा है, वह बिल्कुल गलत है। संत और धर्म गुरु मानव मात्र का दुःख दूर करने के लिए भेजे जाते हैं। संसार से दूर भागने का अर्थ है वह तामसिक शक्तियों से या तो भयभीत हैं, या इतने उनके अधीन हो चुके कि उनका हर आदेश मान कर वे ऐसा कर रहे हैं।

सत्युग में हर प्राणी मात्र का सीधा सम्पर्क उस परम सत्ता से होता था, ऐसी स्थिति में सभी संत थे। युग के परिवर्तन के साथ-साथ ज्यों-ज्यों जीव उस परम सत्ता से दूर हटता गया, संतों ने प्रकट होकर लोगों का पथ प्रदर्शन किया, त्रेता और द्वापर में हमें ऐसे असंख्य उदाहरण मिलते हैं। परन्तु धीरे-धीरे तामसिकता का शिकंजा मजबूत होता चला गया और आज ऐसा समय आ गया है कि एक मात्र उन्हीं शक्तियों का साम्राज्य है।

तामसिकता की अति हो चुकी है। यही कारण है कि इनका अन्त होने वाला है। संसार के कई आध्यात्मिक संत ऐसी भविष्यवाणियाँ कर चुके हैं। पिछले कुछ समय से तो हमारे देश के सत्ता पक्ष के लोगों ने भी ऐसी बातें करनी प्रारम्भ कर दी हैं, जिसे सुनकर अचम्भा होता है। 21 वीं सदी के भारत की तस्वीर जब सत्ता पक्ष दिखाता है तो तामसिक लोग इसका मजाक उड़ाते हैं। मुझे यह देखकर अचम्भा हो रहा है कि इस परमसत्ता ने कैसे सत्ता पक्ष से सच्चाई उगलवानी प्रारम्भ कर दी है। यह कटुसत्य है कि

www.the-comforter.org

वह शक्ति का सूर्य उदय होने ही वाला है। सूर्योदय का आभास काफी पहले होने लगता है। मनुष्य ही नहीं प्राणिमात्र के अन्दर से आलस्य समाप्त होकर, एक नई चेतना का संचार होने लगता है और सूर्योदय के साथ ही सभी प्राणी सृजन में जुट जाते हैं। समय की दूरी केवल भौतिक जगत् को प्रभावित करती है।

अध्यात्म जगत् में वह पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है। इतने लम्बे समय में भौतिक जगत् में जो उन्नति हुई, अध्यात्म सत्ता को उसे अपने अधीन करने में कुछ भी समय नहीं लगेगा। जो संत उसे बहुत पहले देख चुके थे।

श्री अरविन्द ने इसी कारण 24-11-1926 को भगवान् श्री कृष्ण के अवतरण की स्पष्ट घोषणा कर दी। अपने क्रमिक विकास के साथ शीघ्र ही वह परम सत्ता संसार में अपना प्रकाश फैलाने वाली ही है।

(21-02-1988)

www.the-comforter.org

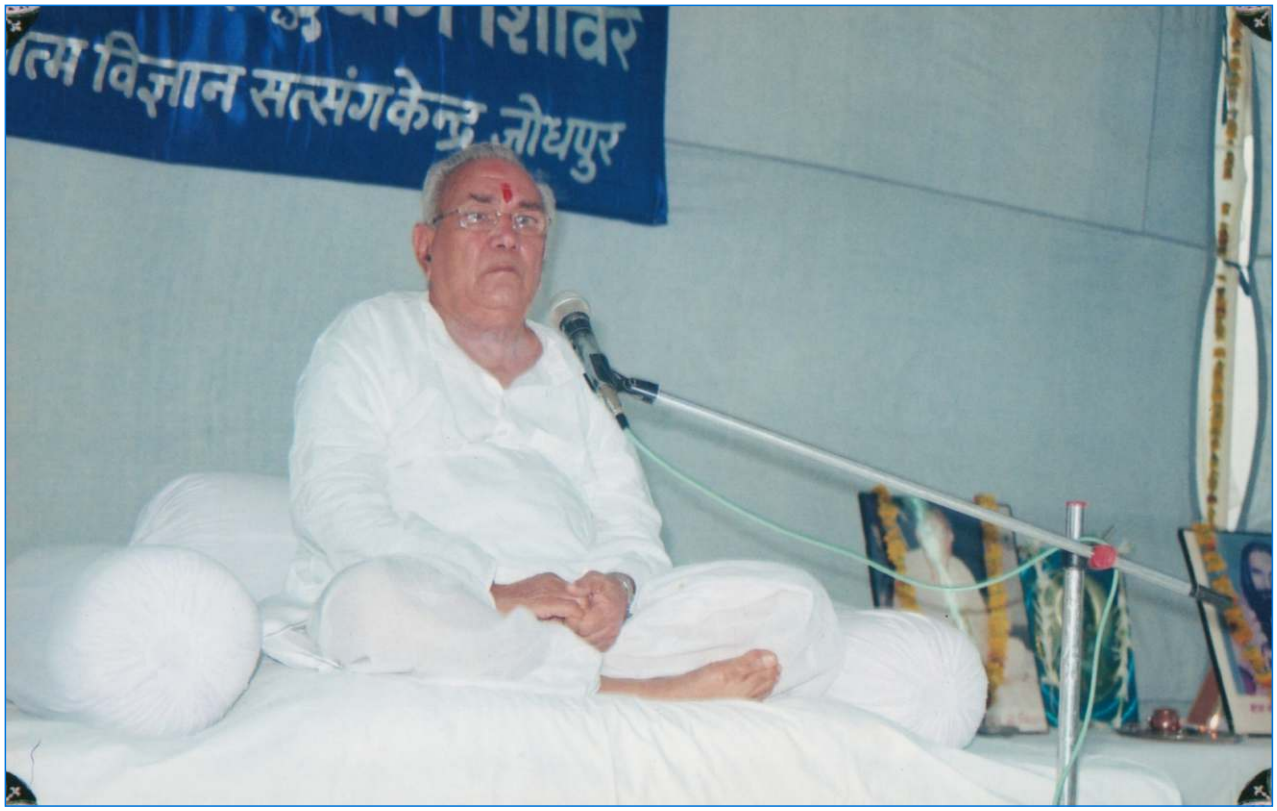

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

Appointments FRI 1996 AUGUST

"धर्म" सम्पूर्ण विश्व में लोप हो चुका है।

इस समय धर्म सम्पूर्ण विश्व से लोप हो चुका है। विश्व के सभी धर्मों के धर्माचार्य चीख-चीख कर कह रहे हैं - हमारे धर्म में हिंसा को कोई स्थान नहीं। फिर विश्व में जो नरसंहार हो रहा, उसका संचालन कहाँ से क्यों और कैसे तथा किसके लिए हो रहा है। आज सम्पूर्ण विश्व में जातियाँ जिन्दा हैं, धर्म जिन्दा नहीं है।

हमारे धर्म प्रधान कहे जाने देश में भी सभी जातियाँ अलग-अलग संगठित हो कर, "लट्ठम शरणम गच्छामी" हो रही हैं। क्यों? एक ही नारा दिया जाता है "धर्म रक्षा हेतु" तो हर जाति अलग अस्त्रों का प्रयोग एक दूसरे के विरुद्ध क्यों कर रही है। जबकि ये सभी जातियाँ एक ही धर्म के अनुयाई होने का दम भर रही हैं। लट्ठ, डंडा, त्रिशूल, तलवार, शंख, मंजीरा, घंटा, चिमटा, मंदिर, मस्जिद आदि सभी एक ही धर्म के अनुयाई होने की डींग हाँक रहे हैं और यही नहीं सभी जातियाँ एक साथ एक ही नारा लगा रही हैं - "अहिंसा परमो धर्मः" फिर लट्ठम शरणम क्यों?

गिरिजाघर और मस्जिद में एक ही ईश्वर की आराधना की जा रही है। असंख्य अलग-अलग गिरिजाघर हैं एक ही धर्म के अनुयाइयों के। सभी एक दूसरे के विरुद्ध विभिन्न प्रकार के घातक, यही नहीं महाघातक अस्त्रों का प्रयोग कर रहे हैं। कमोबेश ऐसी ही स्थिति विभिन्न मस्जिदों में एक ही खुदा की इबादत करने वालों की है।

फिर आणविक, रासायनिक एवं जैविक अस्त्रों का एक दूसरे विरुद्ध प्रयोग किस "ईश्वर" के आदेश एवं आशीर्वाद से कर रहे हैं। ईश्वर तो सबका एक ही है।

आज सम्पूर्ण विश्व भौतिक विज्ञान की भाषा में कई प्रकार के भयानक प्राण घातक वायरस सक्रिय हो गये। मध्य-पूर्व के वायरस ने 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका पर जो मिसाइल प्राण घातक प्रहार किया, उससे विश्व का सबसे शक्तिशाली देश, अपना संतुलन खो बैठा। आघात अचानक इतना गहरा लगा कि सम्पूर्ण अमेरिका मृत्यु-भय से काँप उठा। मानव की इस स्थिति को भौतिक विज्ञान ने "फोबिया" रोग की संज्ञा दी है। अभी तक भौतिक विज्ञान के पास इसका कोई उपचार नहीं है।

अभी-अभी हूणों ने एक ऐसे वायरस का आविष्कार किया है जो मनुष्यों को दम घोंट कर मार देता है। अभी तक उसका भी कोई इलाज नहीं ढूंढा जा सका है। यह वायरस अपने जन्म स्थान से पश्चिमोत्तर की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। यह वायरस हवा के रूख के साथ फैलता है। अतः इसका फैलाव और विस्तार मनुष्य के हाथ में न होकर ईश्वर के हाथ में है।

ये सभी प्रकार के वायरस भारत को भी भयंकर कष्ट दे रहे हैं। यह बात अभी तक ज्ञात नहीं हो सकी है कि भारत किस प्रकार के वायरस का आविष्कार किया है। क्योंकि भारत अहिंसा परमो धर्मः के सिद्धान्त में विश्वास करता है, अतः उसका वायरस अशान्ति नहीं, शान्ति फैलावेगा। अब हिंसा और अहिंसा का युद्ध आरम्भ होने वाला है। परिणाम तो अभी तक भविष्य के गर्भ में छिपा है।

मुम्बई

NOTES

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

1996 AUGUST

"युग परिवर्तन"

Appointments

युग परिवर्तन प्रकृति का अटल सिद्धान्त है, इसके कारण पार्थिव-चेतना में उत्थान और पतन अनादि काल से होते आ रहे हैं, और होते रहेंगे।

वैदिक धर्म के अनुसार चार युग की व्यवस्था है। इस वैदिक व्यवस्था परिवर्तन प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर चलता है अर्थात हर युग अपने पतन के साथ समाप्त होता। सत्य युग चार पाद का धर्म था, त्रेता तीन का, द्वापर दो का और जिस युग में हम जी रहे हैं, उसे कलियुग कहा जाता है। इसमें धर्म का मात्र एक चरण बचा है।

यह एक चरण बहुत छोटा होता। इस लिए इसकी विशेषता है कि इस युग में मनुष्य क्षणभर ही प्रभु का ध्यान और नाम स्मरण करे तो वह तत्काल जीवन मुक्त हो जाता। इस लिए इस युग की समाप्ती उत्थान के साथ होगी।

आज विश्व में कलियुग अपना जो रुद्र रूप दिखा रहा है, जिससे इस भूमण्डल के सभी प्राणी डर से थर थर कांप रहे हैं। इस युग के मानव की ऐसी वृत्ति हो गई है कि वह भयंकर कष्टों में फंसने पर ही भगवान को याद करता है, आराम के समय में भुला रहता है।

आज विभिन्न कारणों से सम्पूर्ण मानव जाति मृत्यु भय से थर थर कांप रही है। अतः सम्पूर्ण मानव जाति एक स्वर से प्रभु से करुण स्वर से पुकार कर रही है कि भू-मण्डल पर शिव्य पधार कर मानव जाति के प्राणों की रक्षा करें।

प्रभु दयालु हैं, और कलियुग की व्यवस्था के अनुसार अगर क्षणभर ही प्रभु का ध्यान करे तो तत्काल जीवन मुक्त हो जाता है।

अतः आज का मानव युग परिवर्तन के सन्धि क्षणों में जी रहा है। युग परिवर्तन का स्पष्ट अर्थ होता है, तामसिक वृत्तियों सम्पूर्ण विश्व से सफाया। यह कार्य विश्व में प्रारम्भ हो चुका है, अन्त के लिए अब लम्बा इन्तजार नहीं करना पड़ेगा।

लाल 6/5/2003

NOTES

8 SUNDAY

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

कामना, आहार, काम-वासना

प्राण की सभी साधारण क्रियाएँ सत्य-सत्ता के लिये विजातीय हैं और बाहर से आती हैं; वे न तो अंतरात्मा से कोई संबंध रखती हैं और न उसमें उत्पन्न ही होती हैं बल्कि वे साधारण प्रकृति से आनेवाली लहरें होती हैं।

कामनाएँ बाहर से आती हैं, अवचेतन प्राण-भाग में प्रवेश करती हैं और फिर ऊपरी तल पर उठ आती हैं। जब वे ऊपरी तल पर आ आती हैं और मन को इनका पता चल जाता है तभी हम उनके विषय में सचेतन होते हैं।

हम उन्हें अपनी इसलिये मान बैठते हैं कि हम उन्हें इस तरह प्राण से उठकर मन में जाती हुई अनुभव करते हैं और यह नहीं जानते कि वे बाहर से आयी हैं। जो हमारे प्राणभाग की, सत्ता की अपनी चीज है, जिसका उत्तरदायित्व प्राण- भाग या सत्ता का है वह चीज स्वयं कामना नहीं है, बल्कि वह है सुझावों की उन धारणाओं या लहरों को स्वीकार करने की उसकी आदत जो विश्वप्रकृति से उसके अंदर आती हैं।

कामना के त्याग का अर्थ है मूलतः लालसा का, भोग की तृष्णा का त्याग करना, उसे एक विजातीय वस्तु की तरह, जो अपनी वास्तविक आत्मा और आंतर प्रकृति की चीज नहीं है, अपनी चेतना से बाहर निकाल फेंकना। किंतु कामना के प्रवेग के अनुसार कार्य करने से इंकार करना भी कामना-त्याग का ही एक अंग है; कामना द्वारा सुझाये कार्य से, अगर वह उचित कार्य नहीं है तो, अलग रहना भी यौगिक साधना के अंतर्गत स्वीकृत होना चाहिये। जब यह कार्य अनुचित ढंग से किया जाता है, एक मानसिक तपस्या के सिद्धांत का या एक कठोर नैतिक नियम का पालन करने की तरह किया जाता है, केवल तभी हम उसे अवदमन या निग्रह कह सकते हैं।

निग्रह और एक आंतरिक मूल चेतनागत त्याग में ठीक वही भेद है जो

www.the-comforter.org

भेद मानसिक या नैतिक नियंत्रण और आध्यात्मिक शुद्धि में – जब साधक यथार्थ चेतना में निवास करता है तब वह यह अनुभव करता है कि कामनाएं उससे बाहर हैं, बाहर से अंदर, निम्नतर विश्वप्रकृति से उसके मन में और उसके प्राणमय भागों में प्रवेश करती हैं। साधारण मनुष्य की जो अवस्था होती है उसमें यह अनुभव नहीं होता; साधारण मनुष्य को तो अपनी कामना का तभी पता चलता है कि जब वह सामने उपस्थित हो जाती है, जब वह उसके अंदर आ जाती है और अपने रहने का स्थान या अभ्यासवश ठहरने की जगह पा जाती है और इस कारण मनुष्य यह समझने लगता है कि वह कामना उसकी अपनी ही है और उसीका एक अंग है।

अतएव कामनाओं से छुटकारा पाने की पहली शर्त यह है कि मनुष्य अपनी यथार्थ चेतना में ज्ञानपूर्वक निवास करे; क्योंकि उस समय कामनाओं को दूर भगाना उस अवस्था की अपेक्षा अधिक आसान होता है जिस अवस्था में मनुष्य को उन्हें अपना ही अंग मानकर उन्हें अपनी सत्ता से बाहर निकाल फेंकने के लिये उनके साथ संघर्ष करना पड़ता है। जिस चीज को हम अपनी सत्ता के अंग के रूप में अनुभव करते हैं उसे काट फेंकने की अपेक्षा बाहर से आयी हुई किसी चीज को अपने अंदर से निकाल फेंकना बहुत आसान है।

जब हृत्पुरुष सामने आ जाता है तब भी कामनाओं से छुटकारा पाना आसान हो जाता है; क्योंकि हृत्पुरुष की स्वयं अपनी कोई कामना नहीं होती, उसे केवल अभीप्सा होती है और भगवान् के लिये तथा उन सब चीजों के लिये जो भगवान् की होती हैं या भगवान् की ओर ले जाती हैं, एक खोज होती है और उनके लिये प्रेम होता है। जब निरंतर हृत्पुरुष की प्रधानता रहती है तब उसके कारण स्वतः ही सत्य-चेतना बाहर निकल आना चाहती है और प्रकृति की गतियां भी प्रायः अपने-आप ठीक रास्ते पर आ जाती हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके

ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्ति पात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान्

www.the-comforter.org

परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी. बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

मैं वैदिक दर्शन के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के सनातन सिद्धान्त में विश्वास करता हूँ। मेरे गुरुदेव का स्पष्ट आदेश है कि माँगने आया कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।